17 मई गोरखपुर। श्री गोरखनाथ मंदिर में मूर्ति प्राण - प्रतिष्ठा के अवसर पर श्री लक्ष्मी नारायण यज्ञ के अन्तर्गत नवनिर्मित मंदिर के सामने स्थित यज्ञशाला में

आज प्रातः आवाहित देवी देवताओं का षोडशोपचार पूजन हुआ । ब्रह्म, विष्णु ,महेश, इंद्र ,सूर्य वरुण आदि षोडस स्तंभों का पूजन। ऋग्वेद द्वार, यजुर्वेद द्वार, सामवेद द्वार तथा अथर्ववेद द्वार का पूजन, वैदिक ब्राह्मण पूजन हुआ। इसके उपरांत नैऋत्य कोण पर वास्तु देवी,वायव्य कोण पर क्षेत्रपाल, ईशान कोण पर प्रधान वेदी एवम् ध्वज तथा आग्नेय कोण पर चौषठ योगिनियों का पूजन वैदिक मंत्रों के बीच हुआ तथा आरती के साथ सुबह का पूजन कार्य संपन्न हुआ।

सायं काल में चारो द्वारों, वेदियों, का पूजन संपन्न हुआ तथा अरणी मंथन द्वारा अग्नि प्राकट्य कर हवन कुंड में अग्नि प्रज्वलित कर यज्ञ में आचार्य गण द्वारा आहुति डाली गई।

आज सभी मूर्तियों को अन्न अधिवास किया गया। यज्ञाचार्य पंडित रामानुज त्रिपाठी वैदिक ने सभी मूर्तियों को अन्न से ढक कर वैदिक मंत्रों के बीच मूर्तियों का अन्न अधिवास कराया गया।

प्रातः से 18 पुराणों का पाठ एवम् वैदिक मंत्रों का पूजन विद्वान आचार्य गण द्वारा संपन्न हुआ।

यज्ञ में योगी कमलनाथ महाराज आज के मुख्य यजमान श्रवण जालान ने पूजन किया ।

यज्ञाचार्य श्री रामानुज त्रिपाठी व अश्वनी त्रिपाठी के सानिध्य में नित्यानाद तिवारी, आशीष पाण्डेय, सोनू पाण्डेय, प्रवीण मिश्रा, अमर तिवारी, नवीन मिश्रा, नितीश पाण्डेय, रुद्रेश, रुपेश, नारायण मिश्रा के द्वारा लक्ष्मी नारायण यज्ञ के अंतर्गत दो लकड़ियों के घर्षण ' अर्णिमंथन ' के द्वारा अग्नि नारायण का प्राकट्य हुआ तथा हवन किया गया।